तात्पर्य

आत्मा प्राकृत देह के साथ जन्मा प्रतीत होता है; किन्तु वास्तव में तो वह अनादि है। उसका जन्म नहीं होता; शरीर में स्थित होने पर भी वह माया से परे, दिव्य और नित्य है। अतएव उसका नाश भी नहीं हो सकता। उसका स्वरूप आनन्दमय है; इसलिए वह स्वयं किसी प्राकृत क्रिया में प्रवृत्त नहीं होता और प्राकृत देहों से संयोगवश उसके द्वारा सम्पादित कर्म उसे लिपायमान भी नहीं करते।

यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते।
सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते।।३३।।

यथा=जिस प्रकार; **सर्वगतम्**=सर्वव्यापी; **सौक्ष्म्यात्**=सूक्ष्म होने से; **आकाशम्**=आकाश; **न उपलिप्यते**=लिपायमान नहीं होता; **सर्वत्र**=सब ओर; **अवस्थितः**=स्थित हुआ (भी); **देहे**=देह में; **तथा**=उसी भाँति; **आत्मा**=आत्मा; **न उपलिप्यते**=लिपायमान नहीं होता।

अनुवाद

जैसे सर्वव्यापक होते हुए भी आकाश सूक्ष्मता के कारण किसी से लिपायमान नहीं होता; उसी भाँति, शरीर में स्थित होने पर भी ब्रह्मभूत जीव शरीर से लिप्त नहीं होता।।३३।।

तात्पर्य

जल, पंक, मल आदि सभी सत्त्वों में होते हुए भी आकाश इनमें से किसी से लिप्त नहीं होता। इसी भाँति, विविध देहों में स्थित आत्मा भी अपने सूक्ष्म स्वरूप के कारण उनसे सर्वथा असंग (निर्लिप्त) रहता है। अतएव प्राकृत नेत्रों से यह नहीं देखा जा सकता कि आत्मा इस देह के संसर्ग में किस प्रकार से है और देहनाश होने पर किस प्रकार इससे अलग होता है। बड़े से बड़ा वैज्ञानिक भी यह खोज नहीं कर सकता है।

यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः।
क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत।।३४।।

यथा=जैसे; **प्रकाशयति**=प्रकाशित करता है; **एकः**=एक; **कृत्स्नम्**=सम्पूर्ण; **लोकम्**=ब्रह्माण्ड को; **इमम्**=इस; **रविः**=सूर्य; **क्षेत्रम्**=इस शरीर को; **क्षेत्री**=आत्मा; **तथा**=वैसे ही; **कृत्स्नम्**=सम्पूर्ण; **प्रकाशयति**=प्रकाशित करता है; **भारत**=हे अर्जुन।

अनुवाद

हे अर्जुन! जिस प्रकार एक अकेला सूर्य सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करता है, वैसे ही शरीर में स्थित एक आत्मा सम्पूर्ण शरीर को चेतना से आलोकित करता है।।३४।।

तात्पर्य

चेतना के सम्बन्ध में नाना मत हैं। यहाँ भगवद्गीता में सूर्य और सूर्य-प्रकाश